श्याम शिक्षा महाविद्यालय दमाऊधारा ऋषभतीर्थ (सक्ती)

Shyam Shiksha Mahavidyalaya

ch-,M- iFke o"k 2015-16

तीसरा पेपर

विषय – शिक्षा के दृष्टिकोण

प्रकरण – पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री – जॉन डीवी

मार्गदर्शक :–

lgk;d izk/;kfidk

Jherh cj[kk flag

प्रस्तुतकर्ता

छात्राध्यापिकाएं :-

सवित्री साहू, शांता पटेल

लक्ष्मी सिंह, संध्या साहू

दिनांक: 26-11-2015

रूपरेखा

- iLrkouk
- thou ifjp;
- thou n'ku
- f'k{kk lc/kh fopkj
- f'k{kk dk mn~n';
- ikB;Øe
- f'k{k.k fof/k
- fo|ky; ,o lekt
- vuq'kklu
- f'k{kd dk LFkku
- Ckkyd dk LFkku
- vk/kqfud f'k{kk ij tk\u Mhoh dk iHkko
- eY;kdu
- lnfHkZr xzUFk lph

tk\u Mhoh

प्रस्तावना:—

जॉन डीवी प्रयोजनवादी विचारधारा के समर्थक थे । इनकी विचारधारा, डार्विन तथा जेम्स के प्रयोजनवाद पर आधारित है । जॉन डीवी ने अपने जीवन में सैद्दांतिक की अपेक्षा व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया । शिक्षा के विभिन्न शाखाओं में इन्होने वैज्ञानिकता के आधार पर प्रयोग किया । डीवी के द्वारा ही प्रोजेक्ट विधि का विकास किया गया । तथा ये विद्यालय को समाज का लघु रूप मानते थे । साथ ही साथ बालक की पूर्ण स्वतंत्रता पर बल दिया । इस तरह जॉन डीवी ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए आधुनिक शिक्षा के विकास में अपने विचारों का महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

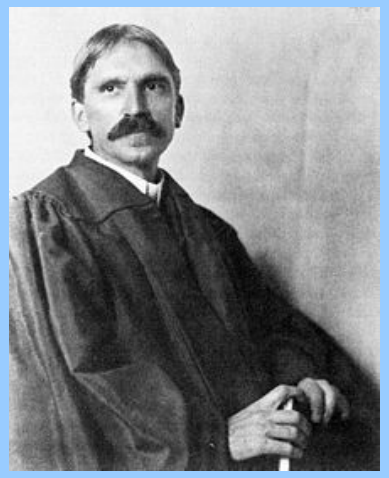

जीवन परिचय

जॉन डीवी का जन्म 27 अक्टुर 1859 में संयुक्त राज्य अमेरिका के वेरमाण्ट नामक स्थान के बलिंटन गांव में हुआ था । परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण भी तीव्र इच्छा शक्ति होने से इन्होने अपनी पढ़ाई की । दर्शन शास्त्र के विषय में इन्होने स्नातक की उपाधि प्राप्त की । प्रारंभ से ही डीवी का शिक्षण कार्यो में झुकाव अधिक था । इसलिये उन्होने शिक्षा संबंधी कई प्रयोग किये । तथा उन्होने कई पुस्तकों की रचना की । सिर्फ शिक्षाशास्त्र व दर्शन के ही नहीं बल्कि मनोविज्ञान एवं राजनीति एवं शिक्षा साहित्य में कई ग्रंथो की रचना की । उनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक Dmocracy and Education को मानी जाती है । 1 जून 1952 को उनका देहांत हो गया ।

शिक्षा संबंधी विचार

जॉन डीवी के अनुसार – " अनुभव की पुनर्निर्माण व पुनर्रचना का एक क्रम है, जो कि मनुष्य की क्षमता में वृध्दि करने के द्वारा अनुभव को और भी अधिक सामाजिक महत्व प्रदान करती है ।"

शिक्षा के उद्देश्य

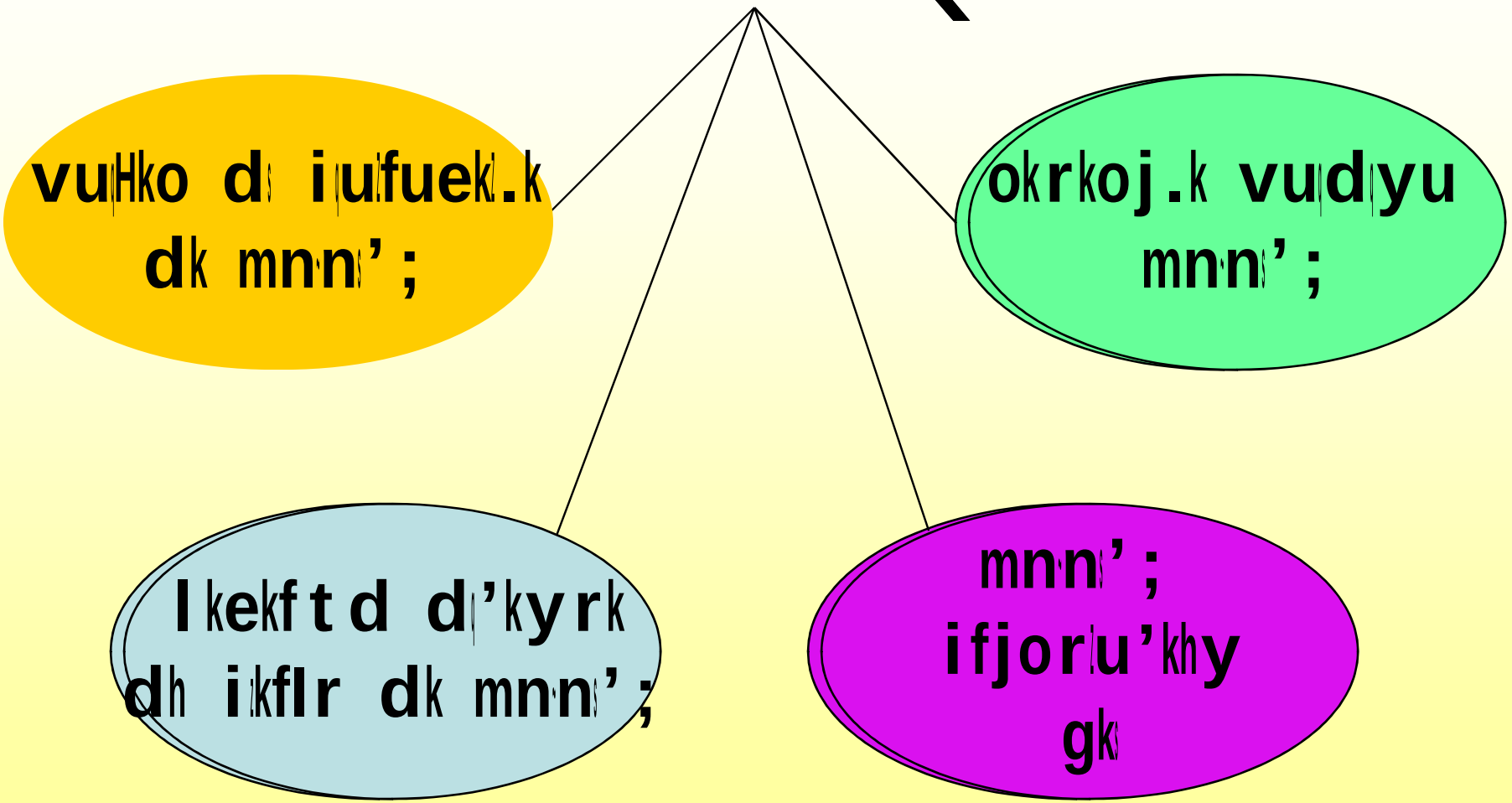

- vuHko ds iqufuZek.k dk mn~ns';
- okrkoj.k vuqdwyu mn~ns';
- lkekftd dq'kyrk dh izkfIr dk mn~ns';
- mn~ns'; ifjorZu'khy gks

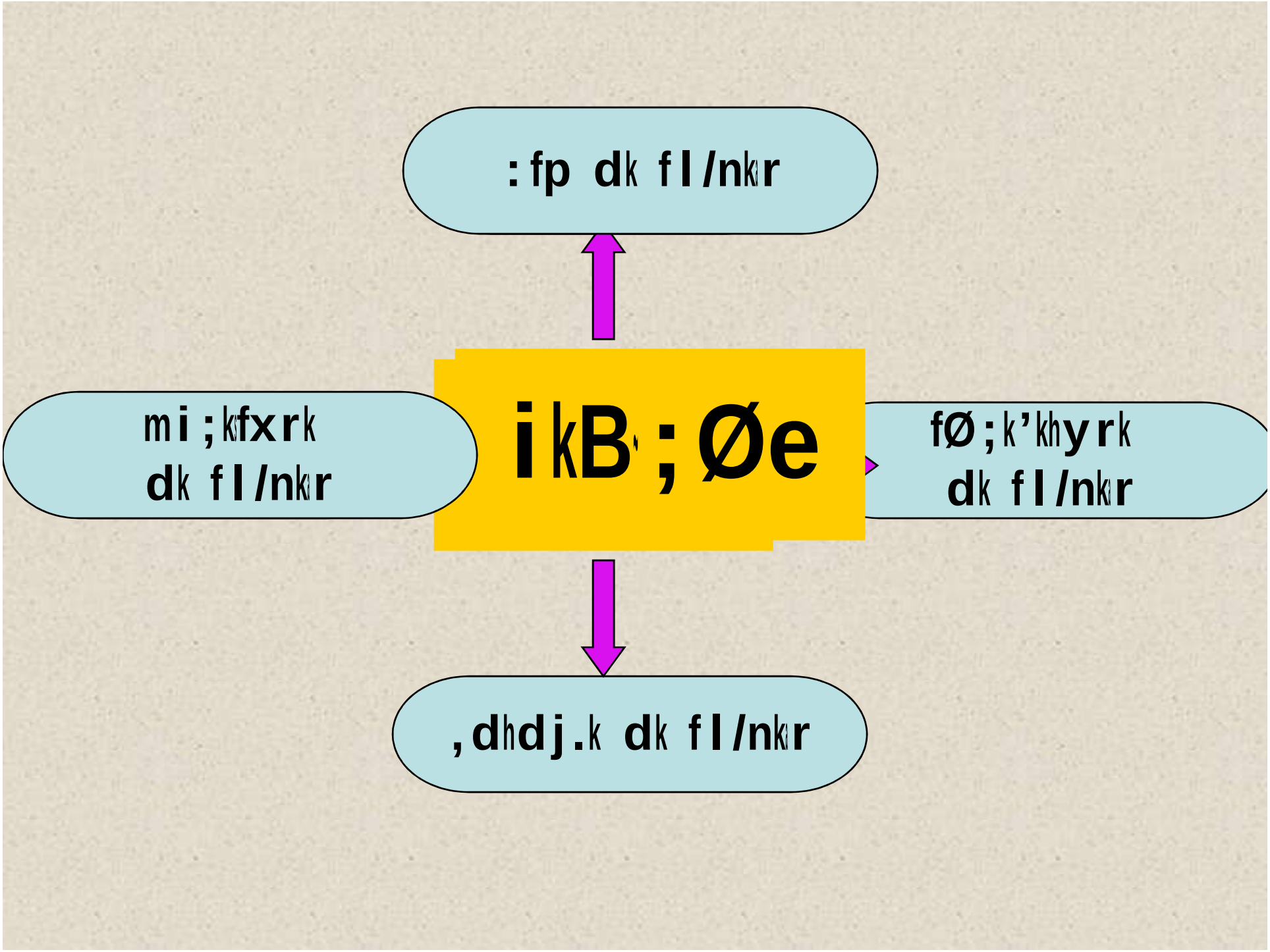
:fp dk fl/nkr
mi;kfxrk
dk fl/nkr
ikB;Øe
fØ;k'khyrk
dk fl/nkr
,dhdj.k dk fl/nkr

f k{k.k fof/k %&

- क्रिया द्वारा सीखना
- स्वयं के अनुभव द्वारा सीखना
- खेल विधि द्वारा सीखना
- प्रयोग द्वारा सीखना

विद्यालय एवं समाज

डीवी के अनुसार विद्यालय समाज का लघु रूप है वे ऐसे विद्यालयों की निंदा करते है जिनमें बालक के प्रति सख्ती का व्यवहार किया जाता है और परंपरागत पाठ्यक्रम का सहारा लेकर सिर्फ किताबी ज्ञान दिया जाता है । वह अव्यवहारिक ज्ञान देने वाले विद्यालयों को बेकार समझते थे ।

अनुशासन

जॉन डीवी दण्ड के कट्टर विरोधी थे । शिक्षा को भय (आतंक) के साथ विद्यार्थी पर नहीं थोपा जाना चाहिए । अनुशासन स्वभाविक हो जो विनय पर आधारित हो जिससे बालक के कार्य में बाधा नहीं आनी चाहिए । अनुशासन उसमें अंदर से उत्पन्न होना चाहिए, तो स्थायी होगा तथा समाज के अनुकूल होगा अर्थात् व्यक्ति का सामाजीकरण ही अनुशासन का मुख्य उद्देश्य है ।

शिक्षक का स्थान

डीवी ने शिक्षक को चतुर बढ़ाई कहां है जो विद्यालय में ऐसे वातावरण का सृजन करता है जिसमें बालक एक कुशल नागरिक के रूप में विकसित होता है उसमें शिक्षक को ईश्वर का प्रतिनिधि कहा ।

"वह लिखते है शिक्षक सदैव ईश्वर का पैगम्बर होता है जो बालक को ईश्वर के साम्राज्य से परिचित कराता है"

बालक का स्थान

आधुनिक शिक्षा पर जॉन डीवी का प्रभाव

01. शिक्षा के उद्देश्यों का प्रभाव
02. पाठ्यक्रम का प्रभाव
03. शिक्षण विधि का प्रभाव
04. विद्यालयों का प्रभाव
05. शिक्षा में सामाजिक मूल्यों का स्थान

मूल्यांकन

जॉन डीवी ने समय, देश और परिस्थिति की मांग को देखते हुए जन कल्याण की भावना से प्रेरित होकर शिक्षा संबंधी विचार प्रस्तुत किये है और इनमें भी संदेह नहीं है कि डीवी शिक्षा प्रणाली में विद्यालयों का रूप बदल दिया तथा बालकों में नई चेतना का विकास हुआ । परंतु उनके शिक्षा सिध्दांत में स्थान–स्थान पर अनेक कमियां भी नजर आती है । डीवी ने वर्तमान विद्यालयों की निरसता से उबकर केवल प्रतिक्रियात्मक रोष की तृप्ति के लिए स्फुर्ति, क्रिया और स्वयं शिक्षा का एक रूप खड़ा किया । किन्तु वे सफल नहीं हो पाये । इसलिये डीवी के शिक्षा सिध्दांत में वह समर्थ का व्यवहारिकता, स्वभाविकता व पुष्टता नहीं है जो शिक्षक के व्यवहार दर्शन में आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रन्थ

उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा का आधार एवं विकास : डॉ. हरिशंकर सिंह

उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक : पूनम मदान

धन्यवाद... !